औबारीर 6-1

कौतुक बत्तारगौ

Arvind Kumar Agrawal

कौवारोर

[काव्य-संग्रह]

(१४)

कौतुक बनारसी

बनारस प्रेस सिण्डिकेट
वाराणसी-१

Arvind Kumar Agrawal



प्रकाशक—बनारस प्रेस सिण्डिकेट, वाराणसी-१
मुद्रक—खण्डेलवाल प्रेस, मानमंदिर, वाराणसी
चित्रकार—कांजिलाल, मधुर
प्रथम संस्करण, होली सन् १९५९

मूल्य : [redacted] रुपया
10/

Arvind Kumar Agrawal

अनन्य-श्री
बाबू विजयकुमार साह को सप्रेम

Arvind Kumar Agrawal

Arvind Kumar Agrawal

लीपा-पोती



गद्य लिखना आसान समझा जाता है और पद्य लिखना कठिन। मुझे पद्य लिखने में ही अधिक सरलता जान पड़ती है। मेरे पद्य को पढ़नेवाले उसे कविता कहते हैं। कवि-सम्मेलनों में इन पद्यों को सुनकर खूब दाँत निपोरते हैं, हें-हें करते हैं और परम प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसे लोगों की इस आनंदानुभूति के सम्बन्ध में अधिक न लिख कर, मैं इतना ही लिखना चाहता हूँ कि कविता सिर्फ गुरुदेव, निराला, पंत और प्रसाद ने लिखी है। इनसे पहले गोस्वामी तुलसीदास लिख गये हैं। अब के कवि खद्योत के समान जहाँ-तहाँ कविता के नाम पर कतवार चमकाया करते हैं। यदि मेरे इस काव्य-कतवार में कुछ कविता का अंश मिल जाय तो यह आपके हृदय और आँख का चमत्कार है, यदि कुछ भी न मिले तो कतवार तो है ही। पढ़ने से बाज मत आइये और प्रसन्न होकर दाँत निपोरिये।

शिवमूर्ति शिव
(कौतुक बनारसी)

वाराणसी
होली, सन् १९५९

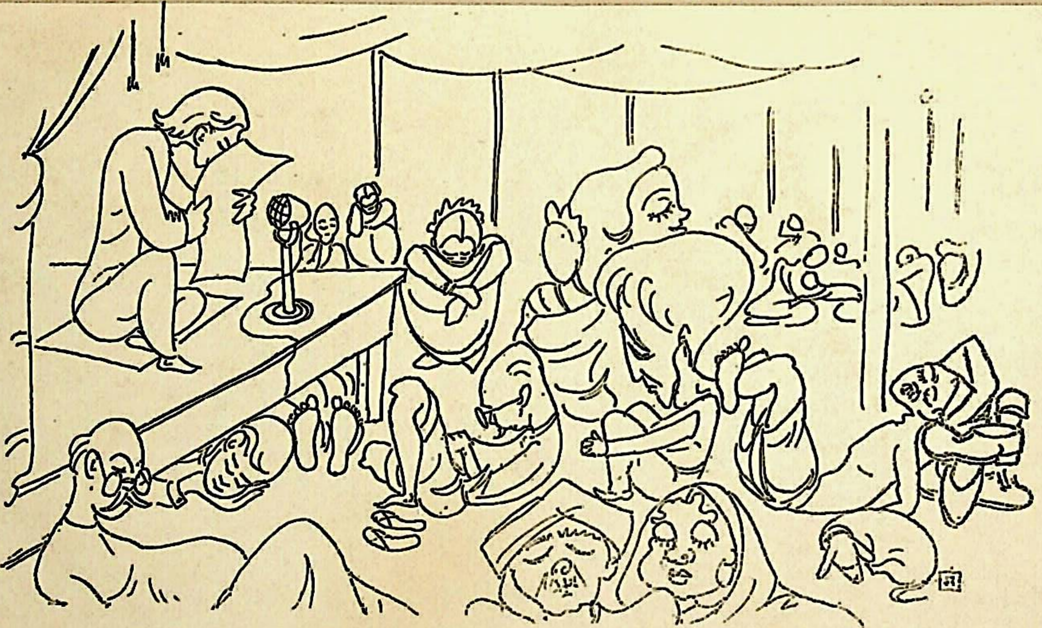
Arvind Kumar Agrawal

Arvind Kumar Agrawal

क्रम

Arvind Kumar Agarwal

★



शान्त रस

Arvind Kumar Agarwal

मच्छर-सम्मेलन

एक दिवस मेरे ही घर में
किया मच्छरों ने सम्मेलन
यह विचार था सब लोगों का
हो कलियुग में नया संघटन

*

छा जायें फिर नयी घटायें
सभी मच्छरों के जीवन में
नया जोश हो, नयी देह हो
नया रक्त हो फिर से तन में

*

दूर-दूर तक अखिल देश में
भेजे गये छपाकर न्यौते
गये जगाये घर भर मच्छर
वे जागे जो दिन भर सोते

शुरू हो गयी कोने-अँतरे
दौड़-धूप भी, चहल-पहल भी
सहयोगी बन गये स्वयं ही
वीर खाट के सब खटमल भी

*

बेचारी कोठरी अकेली
स्वयं सहज पण्डाल बनी फिर
मेरे लिये जान की आफत
स्वयं सहज जंजाल बनी फिर

*

सम्मेलन से काफी पहले
दूर-दूर से प्रतिनिधि आये
यहाँ एक कोठरी अँधेरी
देख-देखकर अति हर्षाये

*

कुछ बोले, है उचित व्यवस्था
कुछ बोले, श्रोता कुछ कम हैं
यहाँ नहीं बिजली के लट्टू
यहाँ नहीं दुख के आगम हैं

*

बहुत ठीक, कुछ मोटे-तगड़े
यहाँ रहा करते हैं मानव
सुनें न ये सब महा फरेबी
कहीं हमारी नाकों का रव

मनोनीत श्रीमान सभापति
बोले—यह उपयुक्त धरा है
धूम्रहीन नभ का मण्डल है
यह काफी गन्दा कमरा है

*

बिना सजाये बिना सलीके
यहाँ सभी सामान धरा है
कहीं किताबें, अखबारों का
बण्डल पूरा खुला पड़ा है

*

लटक रही हैं काली छतरी
इसे जरूरत थी टँगने की
कहीं टँगी है काली वरदी
पूर्ण व्यवस्था है छिपने की

*

डेलीगेटो ! इधर निहारो
यहाँ कई मुँह खोले जूते
इनमें भी तुम रह सकते हो
किन्तु स्वयं ही अपने बूते

*

पहरेवाले फाटक पर ले
खड़े हुए सूँड़ों का छूरा
लोगों के जी में जी आया
हुआ प्रबन्ध सभी जब पूरा

अर्धरात्रि जब हुई, नींद में
डूबा सब परिवार हमारा
बड़ी शान से स्वागत-मन्त्री
जी ने अपना लेक्चर झाड़ा

*

प्रथम उन्होंने प्रतिनिधियों का
स्वागत किया देश में अपने
बाद क्रांति के लगे देखने
निज भाषण में कोरे सपने

*

कहा उन्होंने प्रतिनिधियों से
यह कविवर कौतुक का घर है
जहाँ जुटे हैं हम सब भाई
जहाँ जुटे हम सब मच्छर हैं

*

जैसे 'मदरटंग' है अपनी
भनन भनन भन, भनन भनन भन
वैसे ही उनकी भी भाषा
'हिन्दी' है दुनिया का गायन

*

कौतुक जी हिन्दी के कवि हैं
महाअहिंसक दुबले-पतले
कभी नहीं करते हैं हम सब
उनके तन पर हिंसक हमले

यहाँ कितावें रहने को हैं
यहाँ हमें रहने को बिस्तर
कवि के घर रहते हैं खटमल
कवि के घर रहते हैं मच्छर

*

यहाँ कई पूँजीपति भी हैं
भरे रक्त से मोटे-तगड़े
रक्त बैंक में दे दें चाहें
मिलकर सब दस-बीस घड़े

*

गोरखपुर के मच्छर बोले
पढ़ा जाय प्रस्ताव हमारा
दीन हीन हम हुए जा रहे
उजड़ रहा घर-बार हमारा

*

अगर संघटन ध्यान न देगा
हो जायेगा नाश हमारा
आजादी के बाद हमारे
ही विनाश का गूँजा नारा

*

पटना के मच्छर घबड़ाये
उनका भी प्रस्ताव यही था
यह विनाश का स्वर गहरा था
सभी कहीं था, कहाँ नहीं था

बड़ी पूँछ औ' डंकोंवाले
कुछ देहाती मच्छर बोले
आजादी के बाद नाश का
भूत वहाँ भी घर-घर डोले

*

पास हो गया हमदर्दी का
मिनटों में प्रस्ताव एक फिर
किन्तु वीर कब रुकने वाले
हुए कई प्रस्तावक हाजिर

*

दुबला-पतला किन्तु तेज था
एक तड़पकर मच्छर बोला
मैं विद्युत के नव प्रकाश में
कभी न निकला, कभी न डोला

*

यह व्यवहार न देखा जाता
व्यभिचारी अन्यायी का है
छिड़क रहे हैं सभी फिनाइल
बिलकुल काम कसाई का है

*

कामरेड मच्छर भी बोले
लगा-लगा कर ऊँचा नारा
साँस खींचकर लेक्चर झाड़ा
खींच-खींचकर जूता मारा

वह हिस्सा आजाद नहीं है
जहाँ न रहने पायें मच्छर
जहाँ न रहने पायें खटमल
कीड़े बिच्छू और सनीचर

*

अगर मिली आजादी सबको
क्यों फिर हमें सताया जाता
भारी दुःख महा तकलीफें
अपना दुःख न गाया जाता

*

आये थे इस सम्मेलन में
कविता पढ़नेवाले मच्छर
पढ़ीं जोश से कुछ कविताएँ
स्वयं उन्होंने गला फाड़कर

*

भनन भनन भन भनन भनन भन
तन में कम्पन मन में कम्पन
पंख-पंख में सूँड़-सूँड़ में
खनन खनन खन खनन खनन खन

*

मुझे चाहिये घोर अन्धतम
मुझे चाहिये खूब रक्तकण
खनन खनन खन खनन खनन खन
भनन भनन भन भनन भनन भन

नहीं रहेंगे कभी वहाँ हम
जहाँ तनिक भी नहीं अँधेरा
हम प्रकाश से चिढ़ने वाले
हमें चाहिये तम का घेरा

*

अखबारी मच्छर भी बोले
जल्द करें हम सब आन्दोलन
खनन खनन खन खनन खनन खन
भनन भनन भन भनन भनन भन

*

किन्तु पास ही कौतुक जी थे
नींद लगी थी उनको गहरी
उनके कवि ने कहा मच्छरो,
बीत गयी है अब विभावरी

*

हिन्द देश में फैल रहा है
आज ज्योति का महा उजाला
यहाँ न रहने पाते मच्छर
यहाँ न रहता है तम काला

*

भगो मच्छरो, पार समुन्दर
जहाँ घोर अन्धेरा फैला
जहाँ रहा करते हैं खटमल
जहाँ रहा करता है मैला

हिंसक मच्छर सुन घबराये
उन्हें ज्ञान का पथ झट भूला
टूट पड़े मेरे मुँह ऊपर
इसीलिए मेरा मुँह फूला

*

देशवासियो, होशियार हो
खटमल यहाँ न फिर से आयें
यहाँ न फिर से घिरे अँधेरा
यहाँ न मच्छर रहने पायें

★

Arvind Kumar Agrawal

जान-पहचान

मूर्खता, बुद्धिमानी है और मैं हूँ
ढल रही नौजवानी है और मैं हूँ
कमीज है, शेरवानी है और मैं हूँ
एक आँख कानी है और मैं हूँ

*

वहाँ है चतुराई, रुपया और हैं-हैं
यहाँ बस शैतानी है और मैं हूँ
देखना है, कब तक निबाह होता
तुम्हारी मेहरबानी है और मैं हूँ

*

वहाँ कार है और है हवाई जहाज
यहाँ चप्पल पुरानी है और मैं हूँ
देखकर लचकती हुई देह चट बोले
बिलकुल टूटी कमानी है और मैं हूँ

*

रोयें, अगर उन्हें रोना भला लगता
यहाँ हँसती जवानी है और मैं हूँ
मलाई है न रबड़ी है न मक्खन है
यहाँ चेहरे का पानी है और मैं हूँ

कान पकड़ कर जब तब हिला देतीं
बीबीजी की पहलवानी है और मैं हूँ
वहाँ कविता गजल सोहर नजम
यहाँ कौतुक की कहानी है और मैं हूँ

*

चेहरा मुलायम चमकदार खशखशा
यहाँ झापड़ की निशानी है और मैं हूँ
फेंक ब्लाउज शर्ट वे लेतीं पहन
यहाँ सूरत जनानी है और मैं हूँ

*

कहाँ से काटूँ रकम तुम ही बता दो
बस दुकान की नानी है और मैं हूँ
शायरी नहीं, शायर नहीं, कोई नहीं
यहाँ कबीर की बानी है और मैं हूँ

*

शासन नहीं, रातिब नहीं, राशन नहीं
सिर पर तीस प्रानी हैं और मैं हूँ
मन्त्र फूँका कान में चीनी हुआ वह
चेला महाज्ञानी है और मैं हूँ

*

टोस्ट, बिस्कुट, दूध, रसगुल्ला वहाँ
यहाँ भूसे की सानी है और मैं हूँ
हिट प' हिट देती रहीं, उछला किया
गेंद जैसी जिन्दगानी है और मैं हूँ



Arvind Kumar Agrawal

चोखे चौपदे

तफरीह का सामान नहीं है भाई
चेहरा है पर जान नहीं है भाई
उन्हें देख कर किसी ने किताब लिख डाली
मुझे सोचकर आ जाती है जँभाई

*

लय हो, तर्ज हो, गर्दभ-गान नामुमकिन है
भरे पंडाल में कविजी, सुनसान नामुमकिन है
कविता सुनाइये, फीस लीजिये, जाइये
रुपया के बाद जलपान नामुमकिन है

*

कम्बख्त ! जरा सोच यह क्या करता है
सुरा पीकर बेमजा बेसुरा राग भरता है
सुबह हो, शाम या दोपहर हो लेकिन
रेंकने का भी इक वक्त हुआ करता है

साकी का अगर इक इशारा हो जाय
बलंदी पै हमारा भी सितारा हो जाय
गुलाब-सा मुखड़ा छनों में सींच डालूँ
सूखा हुआ होंठ भी हजारा हो जाय

*

कली कुछ झुक जाय तो हिलनेका मजा मालूम हो
खुशबू भी आ जाय तो खिलनेका मजा मालूम हो
पूरे इक जमाने के बाद मिले हम तुम अकेले
मुस्काके जरा बात करो मिलनेका मजा मालूम हो

*

हौवा न सही, हिम्मत न सही, ललकार तो है
मैटर न सही, प्रिंटिंग न सही, अखबार तो है
रीम का रीम कागज काला करने से मतलब
कविता न सही, कजली न सही, कतवार तो है

★

Arvind Kumar Agrawal

आ गया

बन्धुओ, जलपान आया

सेवड़ा कुछ चाय लड्डू और पापड़
काव्य पढ़ने के लिए चट स्नेह-झापड़
निशिचरों के प्राण में कुछ प्राण आया
बन्धुओ, जलपान आया
मुग्ध नेत्रों में चमक कुछ लोग विह्वल
पावरोटी देख कर कुछ लोग पागल
सहज खाली पेट का झट ध्यान आया
बन्धुओ, जलपान आया

खीर मोहनभोग ऐटम और संदल
देख कर खिल-सा गया है काव्य-मण्डल
जीभ से पानी गिरा ज्यों श्वान आया
बन्धुओ, जलपान आया

ठण्डई, बादाम, मेवा और बूटी
जीभ से चट देखते ही लार छूटी
देह में मस्ती नहीं, तूफान आया
बन्धुओ, जलपान आया

आ गये कविता सुनाने तीन योजन
आह ! घर पर भी मिला है नहीं भोजन
पेट भरते ही उमड़कर होंठपर मधुगान आया
बन्धुओ, जलपान आया



कविता-कविता

कुछ जीत हुई, कुछ हार हुई
दिन-रात रटें कविता-कविता
कुछ आन रही, कुछ शान रही
हर वात रटें कविता-कविता
हर मौसिम में सरदी गरमी
वरसात, रटें कविता-कविता
उफ, जात रहे न रहे जग में,
कमजात रटें कविता-कविता





हास्य रस

कुण्डलिया

फूट गयी है ढोल प्रेम की बजा रहे हैं गाल
मूर्खों की दुनिया में प्यारे लाखों लाख कमाल
लाखों लाख कमाल हिलाते खाली झोला
ऊपर रोगन रंग पुता है नीचे केवल पोला
कह कौतुक कविराय जगत में केवल झोलम-झोल
भला बजावेंगे क्या कविवर फूट गयी है ढोल

*

जीवन एक जवाल उड़ा करता है जैसे झण्डा
छील रहा है कोई सिर को, कोई केवल वण्डा
कोई केवल वण्डा छीले बनकर सबका चाचा
बीवी का दरबार जहाँ बस उड़ता रोज तमाचा
कह कौतुक कविराय सभी की हालत हाल बेहाल
इनका, उनका औ' जन-जन का जीवन एक जवाल

*

पेट नहीं सिलमिट की बोरी ज्यों चुअना कण्डाल
लाद महापापी है उनका अजब गजब चण्डाल
अजब गजब चण्डाल देखकर होवै धोखा
चाम मांस हड्डी है ऐसी ज्यों भण्टे का चोखा
कह कौतुक कविराय सबै कुछ खाते चोरी-चोरी
घण्टे भर में कस जाती है ज्यों सिलमिट की बोरी

दिल का दरिया खुला प्रेम में साफ़ हो गयी टेंट
आशिकजी की माशूका से तब भी हुई न भेंट
तब भी हुई न भेंट रहा सब ठालै-ठाला
प्रेम-फाँस में मरते निशिदिन कितने लल्लू लाला
कह कौतुक कविराय हुस्न की मलका बनी बदरिया
उछल रही है प्रेम डाल पर, नीचे दिल का दरिया

*

उल्लू गधा और हो कोई हम केवल बेकार
अपने घर पर बैठे निशिदिन पढ़ते हैं अखबार
पढ़ते हैं अखबार चाहिये हमको कोई धन्धा
बीबी बच्चे वजन बढ़ाते फटा जा रहा कन्धा
कह कौतुक कविराय मियाँजी डूबें भरकर चुल्लू
घर में अभी गधा कहलाते बाहर केवल उल्लू

*

जूता लिया जुटा करके कवि-सम्मेलन दो चार
जीवन से बढ़ जूता घर में कविता है कतवार
कविता है कतवार जगत में केवल बजती ताली
संयोजक सब बाद काव्य के देते कवि को गाली
कह कौतुक कविराय कवीजी, केवल अपना बूता
और नहीं मिलता है कुछ तो सिर्फ जुटाओ जूता

★

चंट मिले

दो चण्ट मिले, बोले-डोले
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

*

मौके को देख उड़े प्लीडर
मोटर को देख हँसीं गलियाँ
लीडर को देख हँसे लीडर
घोंघों को लख घोंघावलियाँ
गुदगुदा गाँव की जनता को
लीडर ने कहा—वोट दे दो
जीवन की घोर लड़ाई है
दुर्दिन को एक चोट दे दो
लीडर-जनता लो गले मिले
सब अपना टैक्स वसूल चले
दो चण्ट मिले, बोले-डोले
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

*

इस नगरी के चौराहे पर
दो सेठ मिले मोटे-मोटे
समझाते वह कानून रहे
पर जनता के पकड़े झोंटे

दुनिया ने मुँह बिचका-बिचका
कोसा दोनों की तोंदों को
सेठों ने राशन को देखा
देखा कब सावाँ-कोदों को
इस ब्लैक-घूस की दुनिया में
सब चश्मा लगा फ़जूल चले
दो लण्ठ मिले पतले-दुबले
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

*

आफिस की ऊँची कुर्सी पर
दो अफसर बैठे मनमाने
दोनों का हृदय उछाल चले
नोटों के बण्डल बेगाने
ह्विस्की तो अफसर पिये चले,
गल्लों के सब गोदाम सड़े
कुछ घूस बढ़ी, राशन न बढ़ा
उठ खड़े हुए तूफान बड़े
जब दफ्तर में पाकिट न भरी
तब कितने उड़ चण्डूल चले
दो मूर्ख मिले छोटे-छोटे
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

*

कवियों से कवि जी घुले-मिले
उन्नीस चले, कुछ बीस चले
औरों की कविता सुना-सुना
ले-लेकर अपनी फीस चले

अचरज से देख जमाने को
संयोजक जी बस खड़े रहे
चलने वाले चल दिये उधर
जलपान किये सब पड़े रहे
सुनने वाले भी भौंचक-से
सब तोड़-फोड़कर स्टूल चले
दो गधे मिले मोटे-मोटे
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

*

हम जमा-जमाकर पाँव चले
कुछ घोंघे ठेलमठेल चले
हम बचा-बचा कर जिन्हें चले
वे हमको स्वयं ढकेल चले
तन की रक्षा के नये नियम
सबने गढ़ डाले शैतानी
हम जिनकी पकड़ नकेल चले
वे कर बैठे बे-ईमानी
हम बच्चन, पंत, निरालासे लो
खोल अलग निज 'स्कूल' चले
दो चपट मिले, बोले-डोले
फिर खुशी-खुशी में फूल चले

★

Arvind Kumar Agrawal

भैरवी

तुम चन्दन, हम पानी, भैया
रगड़-रगड़ कर कितने मर गये
भये न फिर सुलतानी, भैया

*

निशिदिन सोना-चाँदी काटें
काटें सबकी वानी, भैया
लेकर तन मन धन सब कुछ तो
बने कर्ण-से दानी, भैया
खड़े मञ्च पर विरहा गायें
लेक्चर में निज दशा बतायें
राजनीति की छाती पर नित
कितनी यह मनमानी, भैया
तुम चन्दन हम पानी, भैया

*

सोच-समझ कर साहब बोलें
असली बात जवानी, भैया
बातों की इस पिचकारी में
नेताओं की तैयारी में
हमने जितनी सुन पायी सब
बिलकुल बात पुरानी, भैया
तुम चन्दन हम पानी, भैया

अपनी 'हिस्ट्री' हम क्या गायें
कोरी झूठ कहानी, भैया
पूछ रहे हम सूखे हैं क्यों
माल छिपा कर भूखे हैं क्यों
भला बतायें क्या हम सबको
अपनी यह शैतानी, भैया
तुम चन्दन हम पानी, भैया

*

हमने दर्द पचाने की ही
दुनिया में अब ठानी, भैया
रहते दोनों, गोरे - काले
रहते ज्ञानी औ' मतवाले
चन्दन पानी मिलने में क्यों
करते आना-कानी, भैया
तुम चन्दन हम पानी, भैया

★

Arvind Kumar Agrawal

चाहता हूँ

सबके सजग हृदय पर कण्ट्रोल चाहता हूँ
मैं प्रेम के जगत में भूडोल चाहता हूँ

*

तूफान चाहता हूँ, विस्फोट चाहता हूँ
मेरी सदा विजय हो, मैं वोट चाहता हूँ
कोई भला बता दे, होते शहीद कितने
इस प्रेम के नगर में मिट्टी-पलीद कितने
बेकार आज कितने, बेगार आज कितने
हैं इश्क हास्पिटल में बीमार आज कितने
उनकी बची रहे बस, मैं पूँछ चाहता हूँ
वह नाम चाहता हूँ, वह मूँछ चाहता हूँ

कालिज चले सुबह को, सन्ध्या चले सिनेमा
निश्चित नहीं कहीं है साहब, उजाड़ खेमा
सुकुमार उन करों के बुलडाग बन रहे हैं
खस्ता न बन सके तो अब साग बन रहे हैं
मैं टायटिल दिला दूँ, कुछ खास चाहता हूँ
उनके लिये 'हया' की चपरास चाहता हूँ

*

है 'वार' का जमाना कातिल बने हुए हैं
व्यापार में हृदय के काबिल बने हुए हैं
ओ, गैस से नयन के घायल बने हुए हैं
पंचर बने हुए हैं, डायल बने हुए हैं
उनके लिए कलम का कतवार चाहता हूँ
'वाण्टेड' पढ़ा करें वे, अखबार चाहता हूँ

★

Arvind Kumar Agrawal

बात गयी

जो बीत गयी सो बात गयी

*

कविता में एक इशारा था
माना लपठों का नारा था
जो गूँज गया सो गूँज गया
कवि जी के करतब को देखो
कितने इसने अखबार लिखे
कितने इसने कतवार लिखे
जो लिखे गये फिर कहाँ छपे
पर बोलो अपनी कविता पर
कब कविवर शोक मनाता है
जो बीत गयी सो बात गयी

पुस्तक में थी वह एक गजल
थी घटिया, बढ़िया और नवल
जो छाप दिया सो छाप दिया
सम्पादक का 'पेपर' देखो
पकतीं इसमें कितनी फसलें
छपतीं इसमें कितनी गजलें
जो छाप दिया फिर कहाँ छपा
पर बोलो अपने 'मैटर' पर
कब सम्पादक इठलाता है
जो बीत गयी सो बात गयी

*

भाषण जो होने वाला था
उसमें गड़बड़ घोटाला था
जो बोल दिया सो बोल दिया
लीडर का टूटा दिल देखो
कितने प्याले पिये गये हैं
कितने भाषण दिये गये हैं
सुनने वाले सुन पछताते
पर बोलो अपने भाषण पर
कब लीडर कुछ पछताता है
जो बीत गयी सो बात गयी

*

यह कविता पाठ लड़ाई है
मस्तक फूटा ही करते हैं
जो गलाबाज हैं, गाते हैं
पैसे लूटा ही करते हैं

फिर भी सम्मेलन के अन्दर
वक्ता हैं, सुनने वाले हैं
कुछ लण्ठ चिढ़ाने वाले हैं
छींटे छूटा ही करते हैं
वह कच्चा पढ़नेवाला है
चिढ़ता न चिढ़ानेवालों पर
जो सच्चा कवि है घुटा हुआ
वह पढ़ते कब शरमाता है
जो बीत गयी सो बात गयी



हाथ में अखबार है

गर्द है, तूफान है औ' प्रेम की सरकार है
हाथ में उसके हमारी नाव की पतवार है
कौन कहता है हमारा हाथ है खाली
डेढ़ कालम का हमारे हाथ में अखबार है

*

तोप है, तलवार है औ' साथ में कानून है
पास में केवल हमारे न्याय का मजमून है
कौन है इस हिन्द का संसार में उनके मुकाबिल
है यहाँ धोती फटी साबित वहाँ पतलून है

*

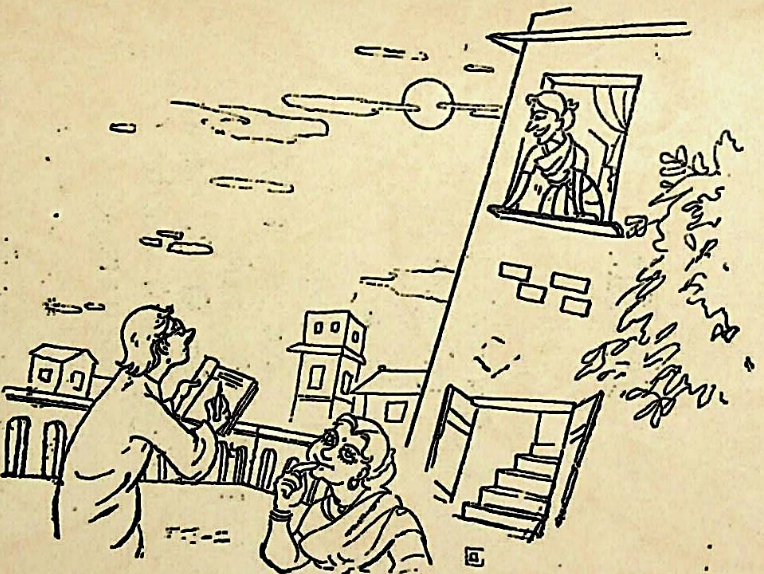
आज रोटी और कपड़े में छिपा अरमान है
नोट है, सरकार है, कण्ट्रोल की दूकान है
एक हफ्ते के लिये है पास में गेहूँ अभी
और खद्दर भी हमारे पास आधा थान है

*

प्रेम है, परिवार है, परतन्त्रता का गान है
राशनिंग अफसर नहीं, वह आजकल भगवान है
है हवा भी दी उसी ने, है दिया यह पेट जिसने
और राशन-कार्ड पर सबको दिया सामान है

★





श्रृंगार रस

Arvind Kumar Agrawal

प्रेम-गीत

मैं तुम्हें अखबार में पढ़ता रहा
तुमने न जाना

*

रूप की माया तुम्हारी
केमरा से था चुराया
प्रेम-शीशा के सहारे
वेश को मैंने सजाया
मैं तुम्हें तस्वीर में मढ़ता रहा
तुमने न जाना

*

सौत है मेरी उमर जो
यों मुझे तुमने घटाया
चाँदनी काया स्वयं ली
औ' रबर मुझको बनाया
याद में घटता रहा बढ़ता रहा
तुमने न जाना

रो पड़ीं तो रो पड़ा मैं
हँस पड़ीं तो हँस पड़ा यूँ
तेल सागर का जहाँ,
जिसमें पकौड़ी-सा खड़ा यूँ
मैं कढ़ाही में सदा कढ़ता रहा
तुमने न जाना

*

कार पर यदि मैं चढ़ूँ
फटकार वाले जान जायें
रेल पर यदि मैं चढ़ूँ
सरकार वाले जान जायें
मैं तुम्हारी आँख पर चढ़ता रहा
तुमने न जाना

*

आज कितने पढ़ चुके हैं
प्रेम में महिमा तुम्हारी
आज कितने गढ़ चुके हैं
प्रेम की प्रतिमा तुम्हारी
मैं तुम्हें नित स्वप्न में गढ़ता रहा
तुमने न जाना

★

Arvind Kumar Agrawal

टायटिल

कहाँ है रोशनी उन-सी टके की एक कैंडिल में
उन्हें मैं बाँध लाया हूँ तुम्हारे पास साइकिल में
मेरे साकी, अधर से चाय में चीनी दिया कर तू
अभी हड़ताल है जब तक दुकानों में शुगर मिल में
मकाँ जो लौटकर आयीं सिनेमा देखकर निशि में
उन्हें कुछ दर्द-सा उठता रहा बस देह में. दिल में
उन्हें बैठा के रिक्से पर घिसी-सी जिन्दगी के मैं
लगाता जा रहा हूँ जोर यों रह-रह के पैडिल में
इलेक्शन में जमानत जब्त भी उनकी हुई जब से
घुसे, बरसात बीते पर घुसी ज्यों मेढ़की बिल में
मेरे जो नाम के आगे उन्होंने लिख दिया बुद्ध,
सही टायटिल के आगे क्या रखा, एमे की टायटिल में

★

Arvind Kumar Agrawal

बन जाना

किसी कवि के प्रलापों की
तुम्हीं पहचान वन जाना
तुम्हीं उपमा, तुम्हीं तुक भी
तुम्हीं उपमान वन जाना

*

व्यथा में रूस-से प्रेमी
तुम्हारे पास जब आयें
तुम्हीं इटली, तुम्हीं जर्मन
तुम्हीं जापान वन जाना

*

प्रलय की रात जब आये
किसीको जल्द मत मिलना
. से सरकार, राशन का
तुम्हीं सामान वन जाना

विसुध अपनी हिलोरों में
फँसे जब राजनीतिक हों
तुम्हीं लीडर, तुम्हीं लेक्चर
तुम्हीं तूफान बन जाना

*

प्रगति रुक जाय यदि कुछ
आजकल अनजान कवियों की
तुम्हीं कविता, तुम्हीं कविवर
तुम्हीं जलपान बन जाना

*

पढ़ो कविता, सुनो कविता
यही बस एक फैशन है
इसी बस ध्येय को लेकर
तनिक शैतान बन जाना

★

Arvind Kumar Agrawal

खुदा ही जाने

रचा उसी ने महान कवि को
रची उसी ने नयी जवानी
रचा उसी ने महान दिल को
रची उसी ने कमर कमानी
सफा अगर की अरे उसी ने
नवीन चेहरा, नवीन मूँछें
महान कवि जी उदास क्यों हैं
लिये नयन में नयी कहानी
न हमसे पूछो, न उनसे पूछो
खुदा की बातें खुदा ही जाने

*

रचा उसी ने पहाड़ शिमला
रचे उसी ने महान लीडर
रची उसी ने महान दिल्ली
रचे उसी ने महान लेक्चर

सजा अगर दी अरे, उसी ने
भरीं न जेलें, मरे न पागल
महान लीडर उदास क्यों हैं
लिये हृदय में नया बवण्डर
न हमसे पूछो, न उनसे पूछो
खुदा की बातें खुदा ही जाने

*

रचा उसी ने शहीद हिटलर
रचा उसी ने शहीद रावण
रचा उसी ने विरोधियों को
रचा उसी ने सुमूर्ख जनगण
रचा अगर तो बुरा किया क्या
नवीन आलिम, नवीन जाहिल
महान शासक उदास क्यों हैं
लिये हिमालय पहाड़-सा मन
न हमसे पूछो, न उनसे पूछो
खुदा की बातें खुदा ही जाने

★



बीभत्स रस

Arvind Kumar Agrawal

बड़ी माँग है

कवि-सम्मेलन में कविवर की
वड़ी माँग है, बड़ी माँग है !

*

क्या कहते हो ?
कविवर सारे घर के निरे निठल्लू हैं !
क्या कहते हो ?
मध्य निशा में चरनेवाले उल्लू हैं !
क्यों कहते हो ?
बात बड़ी यह
बात कड़ी यह
लग जायेगी, कवि की कविता जग जायेगी

अभी देख लो, काव्य सुनाकर
कविवर कैसा सोता है ?
बात कड़ी सुन फट न जाय दिल
बहुत नरम होता है !

*

यह जो आँखों में लाली है,
यह जो होठों में गाली है,
यह जो सिर पर सुन्दर वन है,
हाव-भाव है, छूम-छनन है,
तड़क-भड़क है, उछल-कूद है,
और पसीना कई बूँद है !

*

यह सब क्या है ?
यह सब क्या है ?
यह सब तेटे कत गदि गन धा है !
और सिड़ी जनता के सम्मुख
चट उलांग है, पट छलाँग है!
कवि-सम्मेलन में कविवर की
बड़ी माँग है, बड़ी माँग है!

[२]

मूँड़न हो या हो नकछेदन
या विवाह पर मिले निमंत्रण
हाँ, विवाह पर मिले निमंत्रण

यहाँ-वहाँ झट दौड़ दनादन
फीस माँगता है इक्यावन
मनीआॅर्डरों के भी रुपये
खा जाता है कवि का जीवन
संयोजक पछताकर मन में
रह जाते हैं दुख के घन में

*

कवि के दिल में आग लगी है
इसी आग की अमर निशानी
कवि के भकुवाये चेहरे पर,
क्यों कहते हो ?
नयी आग है! नयी आग है!
बड़ी पुरानी, बड़ी पुरानी!
यही आग है जिससे जलते
महफिल और थियेटर
यही आग है जिससे जलते
झोंटावाले कायर

*

यही आग तो सुलग रही है,
भैया, हर कवि-सम्मेलन में!
'इस' में, 'उस' में, चिर अनकुस में,
नयनों के नव मशीनगन में
इसी आग के हेर-फेर में
उजड़े कवि ने
झट कविता की टाँग तोड़ दी!
यह कविता की आग.

बहुत तेज हैं,
बहुत जोर से झुलस रही है
छन्द-बन्द को,
हाव-भाव को
शब्द-अर्थ को
हर समर्थ को !
यह कविता में लटक रहा जो,
नया छन्द है, नयी टाँग है !
कवि-सम्मेलन में कवि जी की
बड़ी माँग है, बड़ी माँग है !



प्रेमनगर की होली

प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

*

जो सच्चे असली प्रेमी हैं
जो अपने सिद्धांतों पर हैं
वे स्वयं सहज ही आ जाते
झट नयन-जेल के भीतर हैं
उनको वारण्ट दिखाना क्या
उनको संगीन दिखाना क्या
उनको लड्डू औ' बरफी क्या
उनको नमकीन दिखाना क्या
जो मूखे मुहब्बतकी टी.बी.के
कोरे नकली रोगी हैं
वे प्रेमनगर के रहने वाले
प्रेमी महा सनीचर हैं

ये वे-मतलब के रोगी हैं
ये वे-मतलव के आशिक हैं
ये खाते हैं मुष्टिकाघात
ये खाते डण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

[२]

जो प्रेमी सत्योपासक हैं
वे कागज पर रख देते दिल
फिर उनको कौन कहे बुद्धू
फिर उनको कौन कहे जाहिल
चल जाती आँखों की तकली
आँसू का सूत निकलता है
छाती पर रूई धुनते हैं
यह उनकी परम सफलता है
यह आन्दोलन रचनात्मक है
होती है नीरा की बरखा
चलता ही रहता है निशिदिन
यह प्रतिक्षण जीवन का चरखा
यह कौन उधर का भेदी है
यह कौन उधर का खुपिया है
इन नकली सत्याग्रहियों का
फूटेगा भण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

[३]

यह प्रेम-नगर का क़िस्सा है
यह प्रेम-नगर की होली है
मैं अमर कोश से लिखता हूँ
यह बिलकुल नयी ठिठोली है
कुछ प्रेमी बिलकुल काले हैं
कुछ प्रेमी बिलकुल पागल हैं
दिनरात सटे रहते हैं सँग
कुछ प्रेमी जैसे खटमल हैं
कुछ प्रेमी चश्मा वाले हैं
कुछ अन्धे हैं, कुछ घायल हैं
कुछ टायर ट्यूब सरीखे हैं
कुछ पन्चर हैं, कुछ डायल हैं
बीमार सदा रहते हैं वे
उल्फ़त के ज्वर के रोगी हैं
पहना दो फिर बीमार न हों
भैरव का गण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

[४]

कुछ झक्की हैं, कुछ शक्की हैं
कुछ प्रेम-घाट के टट्टू हैं
कुछ बुद्धिमान हैं, शायर हैं
कुछ नाच रहे बन लट्टू हैं

कुछ गुण्डे हैं, मुछमुण्डे हैं
कुछ प्रेमी महा असुन्दर हैं
कुछ प्रेमी काकुल रखते हैं
कुछ प्रेमी महा मुछन्दर हैं
कुछ हिंसावादी प्रेमी हैं
जो शीश उतार धरें भू पर
असफलता पर गाली देते
हैं कुछ केवल पानी पीकर
खूँ का तिलक लगा करके
हैं धूनी कई रमा लेते
कुछ प्रेमदेव के मन्दिर में
बन जाते पण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

[५]

माशूकों को देखे दुनिया
जैसे मुख है अड़धंगी-सा
धनुषाकार रीढ़ उनकी है
यह पेट सटा सारङ्गी-सा
हैं हरी बाँस की सूखी टहनी
जैसी बाहें लटक रहीं
दिखा दिखा जो करतब अपना
प्रेमी का दिल हैं झटक रहीं

मंसूरी की छड़ी सरीखी
उछल-उछल चलती टाँगें
वे प्रजातन्त्र से हड़तालें कर
रूप और यौवन माँगें
ज्यों सिर्फ पसलियोंके पिंजड़ेमें
टाँय-टाँय करता तोता
दिनमें अनशन, निशिमें भोजन
यह खूब वितण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

[६]

हैं बीत गयीं कितनी सदियाँ
पर जन जन सत्याग्रह करते
प्रेमिका और प्रेमी दोनों
हैं नयन-जेल भरते रहते
खाते समाज के हैं डण्डे
खाते समाज के हैं धक्के
कभी भीड़ से सहज न हारें
ये सत्याग्रही परम पक्के
हो लाठी-चार्ज भले इन पर
या चला करें इन पर चक्के
प्रेमी तो बस प्रेमी ही हैं
ललचें सारे चपट उचक्के
सिरके सुन्दर-वन में कङ्घी
कर लो जल्दी झोंटा वालो

ओ मुछन्दरो, बन जाओ तुम
जल्दी मुछमुण्डा होली में
प्रेम सत्य का आग्रह है
फहराओ झण्डा होली में

● आकाशवाणी के सौजन्य से



अखबार

यह सब कागज की है माया

*

तिथि तक ठीक पत्र जो निकला
ग्राहक का पत्थर दिल पिघला
कागज मन में, कागज में मन
कागज मन भरमाया
यह सब कागज की है माया

*

कागज में दुनिया दीवानी
इस महँगी में दाना-पानी
तीन इंच लम्बे कागज से
ही मैंने भी पाया
यह सब कागज की है माया

*

जिसको देखो, उसके कर में
कागज छाया है घर-घर में
फिर भी मिलता नहीं सभी को
समझ नहीं कुछ आया
यह सब कागज की है माया





रौद्र रस

मस्त नगर

मस्त नगर की कथा सुनाता
मैं लिख जाता हूँ मनमारे
भला-बुरा जो कुछ लिखता हूँ
पढ़ते-पढ़ते सुन लो, प्यारे

*

मस्त नगर कंकड़-पत्थर का
बसा हुआ है नदी किनारे
नदी चूमती मस्त नगर को
नगर नदी को रोज सँवारे

*

मस्तानों का मन बसता है
कंकड़ - कंकड़ पत्थर - पत्थर
चार लाख रहते मस्ताने
केवल एक नदी पर निर्भर

*

नगर नदी का धनुष उठाकर
तीर पुण्य का मारा करता
पाप वेधकर नित्य दक्षिणा
पावन हाथ उतारा करता

केवल एक अँगौछा पहने
केवल एक अँगौछा डाले
मस्त नगर का प्यारा प्रतिनिधि
मस्त सवारी रोज निकाले

*

इस नगरी में उड़ने वाला
गहरेबाजों का दल रहता
अपनी ही मस्ती में डूबा
अपनी ही मस्ती में वहता

*

इस नगरी में हैं कुछ लोफर
इस नगरी में रहते गुण्डे
यहाँ रहा करते हैं मुच्छन
यहाँ रहा करते मुछमुण्डे

*

कौवा, उल्लू औ' चमगादड़
कई किस्म के जीव बसे हैं
मस्त नगर के घेरे में कुछ
शेर वाघ भी नये फँसे हैं

*

केवल कुछ कौवे हैं ऐसे
काँव-काँव हैं करते रहते
कुछ कौवे अखबारों में ही
अपनी बात हमेशा कहते

जितने उल्लू मस्त नगर में
मन का रंजन करते गाकर
अर्धरात्रि में चिल्लाते हैं
बैठ मंच पर धन्य, निशाचर

*

दफ्तर की कुर्सी से चिपटे
यहाँ रहा करते चमगादड़
जिन्हें कभी भी मिली न मस्ती
उड़ा रहा पस्ती का अन्धड़

*

मस्त नगर में देने वाले
कई रहा करते हैं राशन
राशन में कतवार मिलाकर
नित्य पेट पर करते शासन

*

रहते हैं कुछ बुनने वाले
तार तार में पन्ना - हीरा
कैसे बनती यहाँ लँगोटी
बता गये हैं साधु कबीरा

*

मस्त नगर में गली-गली में
कोने अँतरे रहते शंकर
तीरे तीरे मन्दिर मन्दिर
पत्थर पत्थर कंकर कंकर

मस्त नगर में मौनी रहते
मस्त नगर में रहते भैरव
ऐसे जिनके घर में चूहे
ऐसे जिनके घर में वैभव

*

इसी नगर में गुपचुप रहतीं
सड़क किनारे भारत माता
धौरहरा भी यहीं खड़ा है
सबको अपना ठेंग दिखाता

*

मस्त नगर में ऐसा चुम्बक
दूर-दूर से सब खिंच आते
दरस-परस कर मज्जन पाना
अपना तन-मन-धन दे जाते

*

चले चलो

लखनऊ चलो, लखनऊ चलो

हर सड़ी ईंट हो गयी नयी
हर नक्श नया, हर चीज नयी
हर नेता का दरबार नया
हर मन्त्री की दहलीज नयी
हर बाग बँदरिया में बँगलो
लखनऊ चलो, लखनऊ चलो

*

यह काशी है बीमार शहर
लखनऊ बहुत गुलजार शहर
नद नहीं रहा तो नदी रही
गङ्गा न सही, गोमती सही
दशाश्वमेध पर मत टहलो
लखनऊ चलो, लखनऊ चलो

*

वह लीचड़ क्या जो गया नहीं
है हफ्ते में दो बार वहाँ
वह लीडर क्या जो झटके में
ले गया नहीं घरबार वहाँ

वह तेज शहर तर्रार शहर
हर ढंग बदल ढुलमुला शहर
वह बन्द शहर वह खुला शहर
बदमाश नहीं चुलबुला शहर
सब समझ-बूझकर तब निकलो
लखनऊ चलो, लखनऊ चलो

*

हर मोटर में, हर रिक्से में
हर इक्के में है तेज वहाँ
हर एक गली हर एक मोड़
हर जर्रा है जरखेज वहाँ
इतिहास नया लिखता रहता
हर पुस्तक का हर पेज वहाँ
कुछ खासुलखास मनुष्यों को
हैं छोड़ गये अंग्रेज वहाँ
नादान नगर वालो, सँभलो
लखनऊ चलो, लखनऊ चलो

*

गेहूँ

गेहूँ का गुणगान करो हे !

*

लाठी खाये, गोली खाये
गेहूँ क्या अब खाओगे ?
नेता को तुम चिढ़ा-चिढ़ाकर
अपने ही पछताओगे !
गेहूँ खाने वालों का क्या
चमड़ा काला होता है ?
गेहूँ उसकी किस्मत में
जो खाने वाला होता है !

जनता अन्धी, राशन सुरमा
नयनों का सम्मान करो, हे
गेहूँ का गुणगान करो, हे

*

नेताजी ने मुझे कहा था
घर में घासें खाने को
और किसी गमलेमें बोकर
पत्ते नित्य चबाने को
अगर किसी में हिम्मत हो तो
अनशन भी कर सकता है
भाड़ सरीखे मूर्ख पेट को
गाली से भर सकता है
दो छटाँक गेहूँ यदि पाओ,
रत्ती भर जलपान करो, हे
गेहूँ का गुणगान करो, हे

*

नेताओं के दल चिन्तित हैं,
ओ ! अकाल का त्राण होगा
लोग अधिक जब मर जायेंगे
तब कैसे शासन होगा

और भला तब किसपर दैया
गोली पुलिस चलायेगी
नया तोहफा विह्वल हो
सरकार किसे मँगवायेगी
पेट बिचारे का शासक के
हित तिल-तिल बलिदान करो, हे
गेहूँ का गुणगान करो, हे



होली में

सुना है बन गये मुर्गा
न देते बाँग होली में
अड़ा है दिल मुनाफे में
अड़ाते टाँग होली में

*

कहें क्या डेढ़ चावल की
अलग खिचड़ी पकायी है
मुहर्रम बन गयी उनको
हमारी माँग होली में

*

नहीं है देखने लायक
किसी की चाल होली में
बजाते जो रहे डंका
बजाते गाल होली में

लगा चौका, लगी कालिख
जमाना राजनीतिक है
खुलेगी लीडरों की भी
यहाँ टकसाल होली में

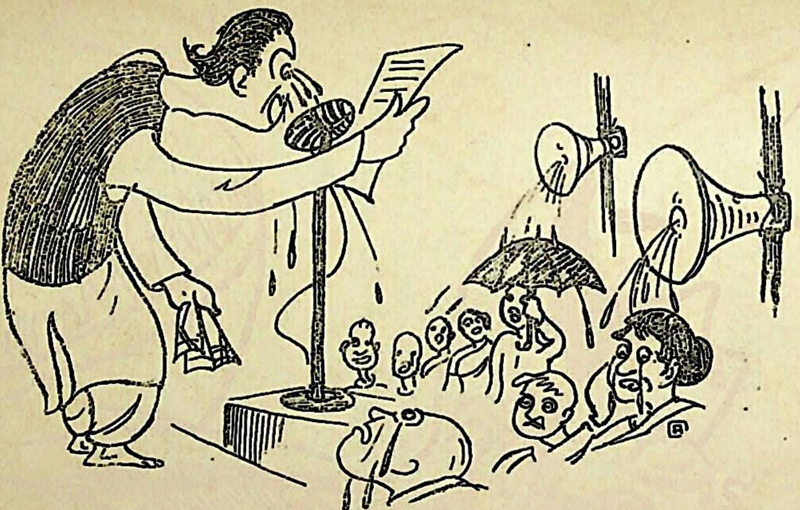
*

टका-सा मुँह लिये अपना
पढ़ो अखबार होली में
अभी खाली नहीं है
इश्क की सरकार होली में

*

जली जो देश की छाती
सुना लेक्चर नमक छिड़का
कहा तुम मान लो फटकार
को अब प्यार होली में

★



करुण रस

पत्रकारी

मैंने भी अखबार निकाला

*

बहुत दिनों से सोच रहा था
कागज सस्ता हो तब छापूँ
बहुत दिनों से समझ रहा था
मैटर हँसता हो तब छापूँ
मेरे संगी-साथी बोले
कोई उल्लू जल्द फँसाओ
बहुत दिनों से ढूँढ़ रहा था
उल्लू फँसता हो तब छापूँ
किन्तु हृदय की रही हृदय में
मिला न कोई दिल का काला
मैंने तब अखबार निकाला

*

बहुत दिनों से ढूँढ़ रहा था
पागल सम्पादक रख गाऊँ
बहुत दिनों से ढूँढ़ रहा था
विज्ञापन खँचिया भर लाऊँ

मेरे संगी-साथी बोले
छींटे लिखकर खूब हँसाओ
बहुत दिनों से सोच रहा था
किसको गाली लिखूँ, चिढ़ाऊँ
किन्तु सहज में नाम न सूझा
पड़ा विषय का भी है ठाला
मैंने तब अखबार निकाला

*

मेरे दफ्तर की सब फाइल
बीबी जी ने स्वयं सँभाली
भाई बन बैठा मैनेजर
काम सभी कर लेता जाली
डिस्पैचर सब बच्चे-वाले
बोल रहे थे, जल्द छपाओ
ब्लेड चलाकर असली मैटर
कटवाने की रीत निकाली
सम्पादक मैं स्वयं बन गया
विज्ञापन - मैनेजर साला
मैंने तब अखबार निकाला

★

अभिलाषा

यदि मैं पत्रकार हो जाता

राजनीति से भरी रात में
देश जागता मैं सो जाता
दूर देश का वन्दन करता
गुन-गुन कर गुण गाता
खोज अँधेरा, ढूँढ़ उजाला
सबको शीश झुकाता
औ' स्वामी का अर्चन करता
कुल कलंक ही धो जाता
यदि मैं पत्रकार हो जाता

नित्य नयी दिल्ली के ऊपर
टिड्डी-सा छा जाता
देख-देखकर नेता नाटक
मस्ती में आ जाता
कौन कहाँ क्या होता क्या है
ताजा खबरों में खो जाता
यदि मैं पत्रकार हो जाता

*

नीति पत्र की ऐसी रखता
कायर भी शरमाता
देश हमारी, मैं जनता की
करनी पर पछताता
जनता रोती, लीडर रोते
भैया, शासक भी रो जाता
यदि मैं पत्रकार हो जाता

★

दीपावली

आज कितने दर्प, में अभिमान में दीपावली है
देख लो, हर खेत में खलिहान में दीपावली है
गाँठ में है, टेंट में है, चोर के बाजार में है
लीडरों की तेल की दूकान में दीपावली है

❋

आज ऐटम के असल बम्बार्ड में दीपावली है
औ' मरीजी विश्व के हर वार्ड में दीपावली है
चाहिये क्या, देश की बिल्कुल सफाई हो गयी
राशनिंग में और राशनकार्ड में दीपावली है

★



कण्ट्रोल चाहता हूँ

लीडर बने हुए हैं
नित सूत कातते हैं
पद्वी गुलाम 'सर' की
वह रोज माँगते हैं

*

यह नीति भी दुरंगी
दुनिया न जान पायी
ड्यूटी बता रही है
'कालर' व नेकटायी

*

कुछ अक्ल चाहता हूँ
कुछ शान चाहता हूँ
प्यारे गुलाम के हित
वरदान चाहता हूँ

इङ्गलिश पढ़े हैं 'चा' को
टी. टी. किया करेंगे
बी. ए. किया करेंगे
बी. टी. किया करेंगे

*

हें हें किया करेंगे
हा हा किया करेंगे
कितना बता चलें हम
क्या-क्या किया करेंगे

*

उनको बता सकूँ कुछ
विश्वास चाहता हूँ
'लॅव' से भरा लबालब
मैं ग्लास चाहता हूँ

*

पीकर निकल रहे हैं,
पागल उछल रहे हैं
बेहोश हो छछूँदर
घर में फिसल रहे हैं

*

हाला बता रहे हैं
प्याला बता रहे हैं
सारे जहाँन को ही
काला बता रहे हैं

इमदाद चाहता हूँ,
फरयाद चाहता हूँ
उनके लिये सितम का
ईजाद चाहता हूँ



धड़कन रुके न दिल की
पेट्रोल चाहता हूँ
मैं प्रेम के जगत में
कण्ट्रोल चाहता हूँ





सड़क

मैं बनारस की सड़क हूँ

देह से दुर्बल बहुत हूँ
और लम्बी कामिनी-सी
आह, धरती पर पड़ी हूँ
दीन-हीन उदासिनी-सी
साधना-सी कविवरों की
खूब सोती जा रही हूँ
कामना-सी देश की मैं
खूब रोती जा रही हूँ
मैं नहीं हूँ याद आती
बोर्ड के लघु मेम्बरों को

मैं न अपना दुख सुनाती
देश के गुरु लीडरों को
मैं हुकूमत की निशानी
औ' चकल्लस की सड़क हूँ
मैं बनारस की सड़क हूँ

*

जो कहीं बरसात आती
मैं मलाई से नहाती
जो कहीं गरमी पड़ी तो
शौक से उड़ स्वर्ग जाती
आह, खँड़हर-सी पड़ी ज्यों
एक ऐटम बम गिरा हो
देह पर गड्ढे हुए ज्यों
मुँह मुँहासों से घिरा हो
ठीक छाती पर दिनों-दिन
दौड़ गहरेबाज सारे
यह निशानी भी मिटाना
चाहते हैं दिन-दहाड़े
राहगीरों और इक्कों के
कशमकश की सड़क हूँ
मैं बनारस की सड़क हूँ

*

मैं न पूँजीवादियों की
एड़ खाना चाहती हूँ
मैं न संगमरमर सरीखी
फिसल जाना चाहती हूँ

मैं न रिक्सों की उछलती
देह ढोना चाहती हूँ
मैं न खुमचों की पकौड़ी
पास होना चाहती हूँ
चाहती हूँ मैं मरम्मत,
आपरेशन देह का हो
और सीधी-सी कतारों में
ठिकाना गेह का हो
मैं निवेदन कर रही हूँ
मैं सिफारिश की सड़क हूँ
मैं बनारस की सड़क हूँ



बनारस

वसूलों पै अपने सही है बनारस
कराची-सा उल्लू नहीं है बनारस
भला दूसरा भी कहीं है बनारस
शहर में शहर एक ही है बनारस

*

मजा चौक का है चकल्लस बनारस
मिलेगी अगर तो कशमकश बनारस
रटैं आप भी जो बनारस बनारस
बनाये नहीं मूर्ख बरबस बनारस

*

न वरुणा बनारस, न गंगा बनारस
न सीधा बनारस, न नंगा बनारस
बनारस महज मस्त-चंगा बनारस
उड़ाता रहेगा भुजंगा बनारस

फटा दिल अभी सी रहा है बनारस
उन्हें देखकर जी रहा है बनारस
किये गुण्डई जा रहा है बनारस
निरी ठण्डई पी रहा है बनारस

*

लगा तेल, सबुनी किये है बनारस
य' लोढ़ा-सिलौटी लिये है बनारस
बचें, तेज बूटी पिये है बनारस
यही आपका देखिये है बनारस

☆

जवाहरलाल

चूमते सब पैर का कण-कण जवाहरलाल का
हो गया अनमोल है कुछ क्षण जवाहरलाल का
हो गये आजाद हम, होना हमें आजाद है
हो रहा है गरजता भाषण जवाहरलाल का

मुल्क भर में खूब होहल्ला जवाहरलाल का
धन जवाहरलाल का, गल्ला जवाहरलाल का
आज हिन्दुस्तान को अभिमान है इस बात का
हैं पकड़ बैठे सभी पल्ला जवाहरलाल का

आज सारे देश की किस्मत जवाहरलाल है
आज सारे देश की ताकत जवाहरलाल है
कह रहे थे होश में अंग्रेज भी, इन्सान भी
तूफाँ जवाहरलाल है, आफत जवाहरलाल है

डर गये थे खूब सब अफसर जवाहरलाल से
भेंट हो जाती अरे, अक्सर जवाहरलाल से
मिल नहीं सकते कभी दुनिया ! तुम्हारी धूल में
इन्साँ जवाहरलाल-से, लीडर जवाहरलाल-से

देख लो क्या क्या करिश्मा है जवाहरलाल का
शब्द ही है बन गया ढेला जवाहरलाल का
कौन है, जो है नहीं साथी जवाहरलाल का
कौन है, जो है नहीं चेला जवाहरलाल का



लीडर

भाषण करने वाला हूँ मैं

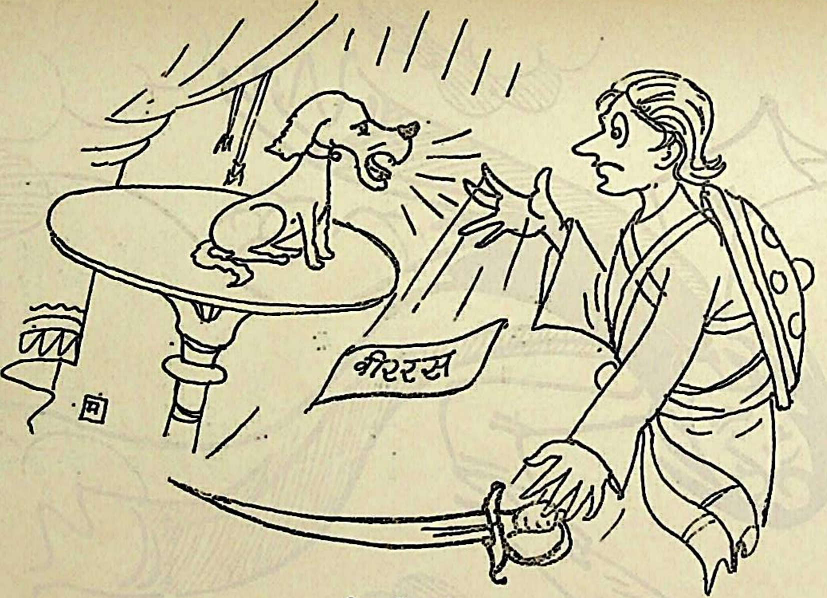
*

लीडर मेरा नाम पड़ गया
खद्दर नित्य पहनता हूँ मैं
लेक्चर देकर प्रस्तावों की
रोकड़ निशिदिन गिनता हूँ मैं
लहर लहर में शांति-युद्ध की
मेरे संगी-साथी लहरें
केशों का जंगल ले सिर पर
आँखों में विप्लव की नहरें
राजनीति का चूहा बन कुछ
कान कुतरने वाला हूँ मैं
भाषण करने वाला हूँ मैं

*

करता हूँ जब काम देश का
दुनिया सारी क्यों सोती है
समझौते के मधु-सागर में
मैंने ही देखा मोती है
दौड़-धूप में किसे पता है
मुझको कितनी मिहनत होती
नेता जी की पीठ अकेली
भार मुल्क भर का है ढोती
आर्डिनेन्स की आँधी से भी
तनिक न डरने वाला हूँ मैं
भाषण करने वाला हूँ मैं




वीररस

? ? ?

चुनाव

यह चुनाव की वेला, रे मन

*

वहुत दिनों के बाद देश में
जीवन लेकर आयी है
वहुत दिनों के वाद हुई यह
लीडर की पहुनाई है

चारो ओर राग है अपना
अपनी ही शहनाई है
देख-देखकर थक जाता मन
जीवन की कठिनाई है
हाय, विरोधी दर्जन भर हैं
वन्दा आज अकेला, रे मन
यह चुनाव की वेला, रे मन

अगर कहीं मैं मेम्बर होकर
कुर्सी का सम्मान करूँ
अगर कहीं मैं भाषण देकर
लीडर का अपमान करूँ

सच कहता हूँ, थोड़े धन में
संसद में हो जाऊँगा
जनता का दुख शासकके घर
निशिदिन खूब सुनाऊँगा
किन्तु यही चिन्ता है भारी
पास न एक अधेला रे मन
यह चुनाव की वेला, रे मन

*

जीवन मेरा बहुत शौक से
अब तक बीता आया है
और आज यह नये शौक का
बादल फिर मँडलाया है

देखूँ मेरी नैया अल्ला
कैसे पार लगा देते हैं
खेते हैं या राजनीति के
सागर में बहका देते हैं
देख रहा हूँ सिर पर अपने
लाखों पौण्ड झमेला, रे मन
यह चुनाव की वेला, रे मन

बहुत दिनों के बाद उठा हूँ
सारा वोट हमारा है
संघ, सभा औ' कांग्रेस का
भैया, कौन इजारा है

प्यास लगी है इज्जत की जब
सोचो कैसे मैं जी पाऊँ
अभी बहुत नीचे है पानी
ऊपर आये तो पी पाऊँ
पालिटिक्स की अधजल गगरी
फेंक रहा हूँ ढेला, रे मन
प्रिय चुनाव की वेला, रे मन



हमारा है !

सारी दुनिया से अच्छा यह
पाकिस्तान हमारा है

*

हम उसके बेहद आशिक हैं
हम उसके पागल प्राणी हैं
हम बालू हैं, हम आँधी हैं
हम बादल हैं, हम पानी हैं
हम उसके बेबस मौला हैं
हम उसके बेशक नेता हैं
हम मुर्गे हैं, हम घोंघे हैं
हम जाहिल हैं, हम ज्ञानी हैं
सारी दुनिया से उर्वर यह
रेगिस्तान हमारा है

सब उसके अल्ला-अकबर हैं
सब उसके चाँद-सितारे हैं
सब मेम्बर हैं, सब लीडर हैं
सब लेक्चर के फौव्वारे हैं
ये हिन्दू हैं, ये मुस्लिम हैं
ये अंगारा, ये पारा हैं
हम धारा में सब वहते हैं
ये काफ़िर एक किनारे हैं
सारी दुनिया से वाहर यह
जुल्मिस्तान हमारा है

*

कुछ चलते-फिरते घोंघा हैं
कुछ चलते-पुरजे तीतर हैं
कुछ लैला हैं, कुछ मजनू हैं
कुछ अगुआ हैं, कुछ लीडर हैं
सब अपने-अपने नौकर हैं
सब अपने-अपने स्वामी हैं
कुछ दोजख में, कुछ जन्नत में
कुछ धरती के भी भीतर हैं
सारी दुनिया से रोशन यह
कब्रिस्तान हमारा है
पाकिस्तान हमारा है





भयानक रस

निकालो

भैयाजी, अखबार निकालो

*

जनता की यह चीज और
है जनता की ही सेवा
साठ रुपल्ली दे देना तुम
सबको ठीक कलेवा

सास ससुर सम्पादक होंगे
तुम बनना जामाता
बेटा भी तो बन जायेगा
भारत - भाग्य - विधाता
कागज से अरि का सिर काटो
तुम तलवार निकालो
भैयाजी, अखबार निकालो

अपने को तुम निज कुर्सी पर
नहीं समझना छोटा
घबड़ाओ मत, जल्द मिलेगा
कागज़ का कुछ कोटा

और तुम्हें सरकार हुकुम भी
बहुत खुशी से देगी
अग्रलेख में गुण गा देना
इससे खूब पटेगी
हिन्दी का तुम पद्य छाप कर
सब कतवार निकालो
भैयाजी, अखबार निकालो

*

कहीं अगर सरकार जमानत
भैया, तुमसे माँगे
झपट पहुँचना श्रीचरणों में
स्वयं दुहाई टाँगे

पत्र-पुष्प कुछ अर्पित करते
ही सब बन जायेगा
और खुदा तब आसमान से
पैसा ही बरसायेगा
बड़े शौक से विशेषांक भी
प्रति रविवार निकालो
भैयाजी, अखबार निकालो

९०

एक चिढ़ानेवाले को भी
पेपर में रख लेना
वेकल बेतुक और वेखटक
कितने चपट मिलें, ना

बड़े जोर अखबार तुम्हारा
चल निकलेगा, भैया
सभी बड़े पढ़ने वालों का
दिल फिसलेगा, भैया
ऐटम वम भी गुम हो जाये
वह हथियार निकालो
भैयाजी, अखबार निकालो



पत्रकार बेचारे

लेख-टिप्पणी लिखते सर-सर
खबर अनूदित करते मर-मर
दिन भर प्रूफ देखते डटकर
और रात में तारे
पत्रकार बेचारे

*

एड़ी से चोटी तक खद्दर
पहने सम्पादक बलभद्दर
बैठे सेवा की नौका पर
जय नेता की जय जनता की
जय प्रधान सम्पादक की जय
जय लेखक की जय पाठक की
मुद्रक और प्रकाशक की जय
लगा रहे हैं नारे
पत्रकार बेचारे

निशिदिन गम खाते हैं घर पर
शुद्ध हवा पीते हैं जी भर
'मालिक' का करने को आदर
नित्य नयी तारीखें आतीं
आ आकर भी फिर-फिर जातीं
वेतन तब भी दिला न पातीं
यद्यपि नोट बहुत बरसातीं
पुर्जा लिख लिख हारे
पत्रकार बेचारे

*

रक्खा है प्रतिभा को बन्धक
शान-प्रतिष्ठा औ' श्रम को ढँक
मिला न वेतन निश्चित तिथितक
कोई बात नहीं है भाई
नाम जिन्दगी का कठिनाई
मर मर सह लेंगे महँगाई
दर्द भुलाते सारे
पत्रकार बेचारे

*

छाप रहे हैं खबरें सारी
मिल के मजदूरों की बारी
हड़तालों की है तैयारी
लेकर मानेंगे मजदूरी

एक न छोड़ें माँग अधूरी
क्यों न करेगा माँगें पूरी
समझ रहे सब अधिकारों को
पूँजीपति को, हत्यारों को
सह न सकेंगे अब वारों को
किन्तु भला क्यों ये समझेंगे
कभी न अपना वेतन लेंगे
हवा फाँककर जल्द मरेंगे
पत्रकार बेचारे



पपीहा

राजनीति की डाल-डाल पर
बोल रहा पी कहाँ पपीहा
कूटनीति के पात-पात पर
डोल रहा पी कहाँ पपीहा

*

कहाँ पपीहा कहाँ पपीहा
खोज रहा पी कहाँ पपीहा
कवि-सम्मेलन की आँधी में
यहाँ पपीहा, वहाँ पपीहा

*

जोर जोर से बड़े शोर से
उगल रहा पी कहाँ पपीहा
सुना-सुना कर अपनी कविता
उछल रहा पी कहाँ पपीहा

*

बात - बात में काली स्याही
घोल रहा पी कहाँ पपीहा
गाँठ-गाँठ फिर प्रगतिशील की
खोल रहा पी कहाँ पपीहा

*

योग्य पपीहा, लण्ठ पपीहा
चंट पपीहा, चोर पपीहा
हिन्दी के साहित्य-जगत में
भैया, चारो ओर पपीहा

*

छायावादी कविता का फिर
क्या जानेगा मोल पपीहा
सिर्फ सुनेगा क्या समझेगा
कवि में कितनी पोल पपीहा

*

गद्य-काव्य की डाल-डाल पर
आज रहा है डोल पपीहा
उसे पता क्या होने वाला
कविता पर कण्ट्रोल पपीहा

*

मधुर कण्ठ है, तड़क-भड़क से
बातें कहता गोल पपीहा
और सुनाने लगता है जब
आ जाता भूडोल पपीहा

रोज - रोज तैमूरलंग की
चला करेगा चाल पपीहा
कभी फुलाता पेट पपीहा
कभी फुलाता गाल पपीहा

*

धन्य धन्य है, धन्य धन्य है
धन्य धन्य अखबार पपीहा
छप जाता है जिसमें तेरा
यह सारा कतवार पपीहा

★